

A new English translation by Khenpo David Karma Choephel

สูมาสูานิเส้า ณิสุราธุสามุ The Thirty Verses

Master Vasubandhu

Translated by Khenpo David Karma Choephel



चूर-स्नर-२१ श्रन्न-१, युर-१वे, यो, यो, नु, यो। क्यान-स्नर-११ हुर-१वे, यो, यो, नु, यो।

In Sanskrit: Trimsikākārikā

In Tibetan: sum cu pa'i tshig le'ur byas pa

In English: The Thirty Verses

प्रह्मान्यायार्वित्रातुराशुरायायायायायायाया । I prostrate to youthful Manjushri.

(1) नन्नान्दःर्केशःशुःहेरःवर्देनाशःस। । श्वःर्केनाशःन्नाहोः नादः हुनःस। । नेदेः इसःसरः वेशःसरः सूरा। । श्वःर्केनाशः न्यादेः नादः हुनः न। ।

That which occurs in various ways
That are labeled "self" or "phenomenon"
Is change in consciousness.
This change is of three types,

- (2) इस्रायर श्चेत्र प्रत्र र सेस्र स्वाप्त प्रत्र । प्रिया या इस्र प्रत्र सेवा प्रवि । ने प्राप्त पावि इस्र भी भावि । इस्र श्चेत्र स्वाप्त स्वाप्त
- (4) देखाळॅ र न न न र बूँ अश है। दि है अ न श्रेन श्राप्त स्थान श्रुदा। देवा खेल र जान स्थान स्था

^{*} Neutral means neither virtuous nor unvirtuous. Unobscured means that it does not prevent the attainment of liberation.

It ceases upon arhatship.
That which arises based on it
And focuses on it is called
Egoism, a consciousness
With egoism as its nature.

(6) नश्चेनश्रात्मासुर-तुःश्चानश्च्रुव्यायी । हिंद् र्वेद्यास्यान्त्वाक्ष्याश्चर्यात्मास्याः विद्याः व

Four obscured but neutral afflictions: The view of self, delusion of self,

Pride of self, and ego-clinging

(7) न्यान्त्रः श्रुं अर्थान्त्रे विदेश्याव्या । त्रेनाः श्रेना । विदेशः हेनः विद्याः स्थितः स्यतः स्थितः स्यतः स्थितः स्

Of that where they arise, and contact And so forth, too. On arhatship, Absorption of cessation, and paths Transcending the world, there is none. (8) वर्ते ते शुरू पानिश्व प्रस्ति | निश्व अप्यास्य स्वास्त्र ज्ञा मिला ।

रिश्रेन अप्यास प्रित प्रेन्ति । प्रित्र प्र प्रित्र प्रति प्रित्र प्रित्र प्रति प्रति प्रित्र प्रति प्रति प्रिते प्रति प्रति

(9) गुद्र-तुः वर्शे द्वादिश । श्रेश्वश्च श्वादिश । देन्य विदेशेंद्व श्वेंद्व श्वेंद

(10) प्रतिसेन् वाया श्रीवाया प्राप्ता । प्रमुक् श्रीया प्रमुक्त स्था प्रमुक्त स्था । प्रमुक्त श्रीया स्था । प्रमुक्त श्रीया स्था । प्रमुक्त श्रीया स्था । प्रमुक्त श्रीया स्था । प्रमुक्त स्थ

(11) अ.क्वर्यश्च.त्रमु.श्वर्यश्चरम्ब्री जिट्ट्रेट.क्वर्यश्चित्रमुट्ट.स्वर्यःस्टर.वर्याःस्ट्रिट.

Nonhatred, nondelusion, diligence, Pliancy, carefulness with those, And non-hostility are virtue. The afflictions are greed, anger,

(12) र कुष्य श्रू न में केंब्र में | किं प्र किं किं प्र किं किं प्र किं प्र किं किं प्र किं प्र किं प्र किं प्र किं प्र किं

(13) वृष्णिक्तुवृष्ण्यस्य प्रकेटिकं येत्। व्रियायेत् सुवृष्ण्यत् सर्वेत् प्राप्तः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वय

A lack of conscience, shamelessness, Agitation, torpor, lack of faith, Carelessness, unmindfulness,

Stinginess, the deceit with those,

(14) ह्रमाणिदालेकाचित्रमाणिदान्दा । विश्वेत्रप्तानिहाण्यादाने चित्रप्तानिहाणिदाने चित्रप्तानिहाण्यादाने चित्रप्तानिहाण्यादाने चित्रप्तानिहाण्यादाने चित्रप्तानिहाण्यादाने चित्रप्तानिहाण्याद्वानिहाण्

(15) श्रृः इस्ययः इन्तरे इस्येश्वयः यथा । है : क्षृते : क्रुंते :

[†] An area of the fourth level of the Form Realm where non-Buddhist meditators who have attained the conception-free absorption (a state of deep meditative absorption in which the movement of mind and mental factors ceases entirely) are reborn.

- (18) इसक्षिशसर्भेत् म्हस्य उन्ना । स्व द्धंत न्या यो न्य स्था । ने स्था ने स्
- (19) व्यक्ष ग्री प्रमास्त्रम् अप्रति अप्

> Any thing thought of by any thought Is itself the imaginary Nature,* but it does not exist.

(21) ज्ञान्द्र के दिन्द के दिन के दिन्द के दिन के दिन्द के दिन के दि

Of the previous forever.

(22) देश्विरः देश्वेरः नावदः द्वरः त्यस्य । यावदः स्रोदः यावदः सः धोदः स्वरः स्रोद्धाः । स्रोः ह्वाः सः स्रोवासः यावदः द्वरः द्वरः । दिः सः स्रोदः स्वरः देशे स्रोवेरः । ।

Thus it is neither different

Nor not different from the dependent,

As taught with impermanence and such.

Unless it's seen, that is not seen.

^{*} In the Tibetan root text, this word is negated — it would read, "There is no imaginary nature." However, the Sanskrit is not in the negative here, and Sthiramati's commentary also phrases it in the affirmative. Thus the translation of this line follows the Sanskrit and Sthiramati's commentary.

- (23) र्हे ने हैं ने है
- (24) प्रत्यां प्रस्केष के प्रत्यां कि प्रत्यां के प्रस्केष के प्रत्यां के प्रस्केष के प्रत्यां के प्रस्केष के प्रत्यां के प्रिक्त के प्रत्यां के प्रत

(26) है :श्रेन्द्रसन्त्रा इंस हेन्या | द्वसन्तर क्षा निर्देशन स्था । देवे निर्देशन क्षा है स्था प्रत्य । विश्व निर्देशन क्षा है स्था प्रत्य । विश्व निर्देशन क्षा । देवे निर्देशन क्षा है स्था प्रत्य । विश्व निर्देशन क्षा । त्रि क्षा प्रत्य विश्व क्षा । As long as consciousness does not Remain within just mere awareness, Until that time, the latencies Of twofold grasping will not cease.

- (27) वर्ने 'त्रण' इस 'ते प्रच्या है न हे आ | दे 'सूझ 'त्र है 'त्रे ज्ञा श्रव अ आ | हे 'सूझ 'त्र है 'त्रे ज्ञा अ आ | हे 'स्ट्र प्रचा के 'स्ट्र है 'स्ट्र प्रचा है | दे है 'ह स 'व्या से 'ज्ञा स अ जिल्ला है | | When you place before yourself The thought that "All of these indeed Are mere awareness!" as your focus, You are not resting in just that.
- (28) व्याविषानिकासकान् श्रेषाकाना ह्या । श्रेष्ट्रियाकाने प्याक्टें व्यवि । व्याप्त स्थापानिकाल । प्राचित्र स्थापानिकाल स्थापानिकाल । प्राचित्र स्थापानिकाल स्थापानिकाल स्थापानिकाल स्थापानिकाल स्थापानिकाल । प्राचित्र स्थापानिकाल स्थाप

- (29) देवे श्रेस्ट्रास्ट्रिंग्स्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्रिंस्ट्र
- (30) देन्नेद्राचनायां अद्दाद्दाद्दाद्दादायां विश्वास्त्र विश्वास्

ब्रुंश-वश्चुर-विद-वुंश-हे-वाह्य-यायव-यर्दे।।। कुंग्गर-क्चें:शावत-देन्द्वें:वाह्य-यायव-यर्दे।।। ब्रुंश-वश्चुर-विद-वुंश-हे-वाह्य-यायव-यर्दे।।।

This completes the Thirty Verses by Master Vasubandhu.

Translated into English by David Karma Choephel according to the commentaries of Sthiramati and Vinitadeva from the Sanskrit and the Tibetan translation by Jinamitra, Śīlendrabodhi, and Bande Yeshe De.



DHARMA EBOOKS PUBLICATIONS



This work is licensed under Creative Commons Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International License.

English translation @ Khenpo David Karma Choephel Cover and Layout: Beata Tashi Drolkar

First edition: January 2022.

DHARMAEBOOKS.ORG

Dharma Ebooks is a project of Dharma Treasure, which operates under the editorial guidance of the 17th Gyalwang Karmapa, Ogyen Trinley Dorje. The proprietary rights of Dharma Ebooks belong to Dharma Treasure Corporation.

